Year-8; Sept. 2017
ISSN–2231-1130
UGC Sr. No. – 48398
VEETHIKA

फेसबुक का साहित्यिक समूह एवं उसकी सृजनात्मकता

डॉ० अजीत कुमार सिंह *

आज जहाँ सोशल मीडिया सामाजिक सम्बन्धों के चरमोत्कर्ष पर पहुँच चुकी है वहीं भारत में हिन्दी की उपयोगिता दिनोदिन बढ़ती जा रही है। इन्टरनेट पर बड़ी रही हिन्दी की सहभागिता में फेसबुक जैसी सोशल वेबसाइट आज हिन्दी के साथ कदम से कदम मिला के चल रही है। हिन्दी साहित्य के प्रचार और प्रसार की दृष्टि से आज यह वेबसाइट नर्सरी भी है और यूनिवर्सिटी भी है। व्यक्तिगत प्रयास से लेकर संस्थागत हर प्रकार से साहित्य लेखन हो रहा है।कुछ हिन्दी प्रेमी समूहों का निर्माण कर साहित्य सृजन कर रह हैं । बहुत से समूहों के बीच से हम कुछ समूहों का सार प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे है वास्तव में फेसबुक पर हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं के अनेक समूह बने हुए हैं। इन सबके अलग–अलग उद्देश्य, सबके अलग–अलग सरोकार हैं किन्तु हिन्दी का विस्तार, यह पुनीत भावना सभी समूह की मूलात्मा है। इन समूहों में जिन पाँच समूहों को चुना गया है। वे हैं–

1. शीर्षक साहित्य परिषद
   https://www.facebook.com/groups/1239303299422484
2. विश्व हिन्दी रचनाकार मंच
   https://www.facebook.com/groups/958602084253017/
3. **हाइकु मंजूशा**
   https://www.facebook.com/groups/1732411363699978/
4. **लघुकथा –सागर में सागर**
   https://www.facebook.com/groups/779877665440856/
5. **मंच (कहानी)**
   https://www.facebook.com/groups/821987311243164/

1 शीर्षक साहित्य परिषद

शीर्षक साहित्य परिषद फेसबुक के उन समूहों में है जिनका सरोकार साहित्य विस्तार है किन्तु ''मूल उद्देश्य नवांकुर कवियों को मंच प्रदान करना है।''[1] इस ग्रुप के 5483 सदस्य हैं और समूह के 13 प्रशासक है। इस समूह में अधिकांश युवा है क्योंकि यह युवाओं को साहित्य के द्वारा बढ़ाने वाला ग्रुप है।

इस समूह में जो साहित्यक गतिविधियाँ हो रही हैं उनका निर्देशन समूह प्रशासक समिति द्वारा होता है। इसमें प्रत्येक 'वार' को एक विषय दिया जाता जिस पर नवाकुंरों को रचना करनी होती है इनमें जिन विधाओं में अधिकांश रचनाएं होती हैं उनमें कविता, गीत, हाइकु, दोहा एवं शेर आदि हैं।

कविता : इस समूह में नवाकुंरों की कविताओं का जब हम अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि ये नवकवि प्रेम, राष्ट्रप्रेम, सामाजिक विसंगतियों आदि पर खूब लिख रहे हैं जैसे कि शंकर कुमार ने उत्तर प्रदेश की ताजा घटनाओं को सन्दर्भित करते हुए 'एन्टीरोमियों' तथा राम मंदिर के संदर्भ में लिखते हैं–

''उसकी सोच तो देखो
राधा–कृष्ण का नाम लेता है
और प्यार पर पहरा बिठाया है।
वाह वाह
ये तेरी दुनिया तुझे मुबारक हो लेकिन सुनो
''इश्क करने वाले डरते नहीं
वो जान दे देते है झुकते नहीं''[2]

यह कविता वर्तमान सत्ता की आस्था पर चोट करती है और बयान करती है कि एक तरफ राधा–कृष्ण तुम्हारी आस्था का केन्द्र है और दूसरी तरफ उन्हीं के प्रतिरूपों (प्रेमी–प्रेमिकाओं) को एन्टीरोमियों दल के द्वारा परेशान किया जा रहा है।

* लखनऊ

वही आगे अरूनेश कुमार गोलू ने लड़कियों के जन्म से आहत होने वाले लोगों की मानसिकता का अपनी इस कविता में चित्र उकेरा है–

''बेटी हो जाना।
एक पाप हो गया
हो गई तो यह
अभिशाप हो गया है
सिमट जाती है जिन्दगी
कुछ गलियारों तक ही
जाना कहीं नहीं है
उसको बस
दूसरे घर तक ही''[3]

इस कविता में बेटियों का किस तरह बेटी ही बना रहना सालता है कवि को। वह अपनी इस पीड़ा को इस कविता के द्वारा बयां करता है।

इसी समूह में अपर्णा झा कि रचना है ''चूडियाँ''। इस रचना के द्वारा कवयित्री ने चूड़ियों के जो विम्ब निर्मित किए हैं वे देखते ही बनते हैं। इस कविता में चूड़ी के प्रति जो स्त्रीवादी दृष्टि है उसका एक रूप–

''चूड़ियाँ नहीं हाथ में हमने
पहन रखीं हैं भाई''
निशानी ये बुजदिलो की
अब ये लगने लगी
चूड़ियों को कायरों की संगी
समझने लगी मैं''[4]

राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से देवेन्द्र प्रताप सिंह 'आग' ने जो कविता लिखी उसका शीर्षक 'नववर्ष की बधाइयां और संकल्प' है। इस कविता के द्वारा कवि कुछ संकल्प लेता है। प्रस्तुत है उसका कुछ अंश–

''ओ अर्द्धरात्रि के उल्लू सुन
अब जाग भोर हो गयी नयी
असली उत्सव आया है अब
नव संवत्सर है वर्ष नयी।''[5]

इस कविता के द्वारा कवि पश्चिमी रंग में डूबे हुए लोगों पर व्यंग्य करता है और कहता है कि यह नव संवत्सर ही भारतीयों का असली नववर्ष है। इस तरह इस समूह में बहुत कविताएं है जो नवांकुर के द्वारा रचित है।

शेर/गजल : शेर–ओ–शायरी तथा गजल का चलन सोशल मीडिया पर दिनों–दिन बढ़ता जा रहा है इसका प्रभाव ज्यादातर साहित्यिक रूचि रखने वाले लोगों पर है। इस समूह में शेर–ओ–शायरी का सृजन खूब हो रहा है। गजल लेखन में संतोष मास्के की एक रचना है जिसमें 'धर्म के ठेकेदारों' का एक नवीन चेहरा प्रदर्शित किया गया है –

इंसानियत के यहाँ दुश्मन कौन ?
धर्म के ठेकेदार ये धर्म के ठेकेदार ।।

x x x

दान के वैसों को यहाँ लूटते हैं कौन ?
धर्म के ठेकेदार ये धर्म के ठेकेदार ।।[6]

इस गजल द्वारा समाज के उन ठेकेदारों का जो चित्रण हुआ है जो धर्म के नाम पर समाज के भोले–भाले लोगों को लूट लेते है। यह गजल नये रचनाकार द्वारा रचित है किन्तु इस कविता की गम्भीरता देखते ही बनती है।

गजले सोशल मीडिया पर जनाभिव्यक्ति का एक नया माध्यम बनने लगी है। ऐसे में नए रचनाकार अपनी नवरचित रचनाओं का प्रदर्शन खूब करते है। इस समूह से नये रचनाकार 'ज्ञानदास मानिकपुरी' की ये गजल–

''इन निगाहों का तेरे बिन आसरा कुछ भी नहीं।
तेरी आखों सा समन्दर दूसरा कुछ भी नहीं ।।

x x x x x

नजर से नजर मिल ही जाती है जग में जानु ।।
ऐसे रिश्तों से बड़ा और दायरा कुछ भी नहीं।।''[7]

वही कु0 देवयानी भारद्वाज इस समूह में दोहों के द्वारा काव्य लेखन करती हैं। इनके दोहों में श्रृंगार का वर्णन बहुत ही सुन्दर है –

''पहिर के पंचरंग चोलना, गई पीव के देश ।
प्रीतम रूप निहार कै, भूल गई निज वेश ।।''[8]

नये रचनाकार मंजुल निगम के द्वारा रचित पक्तियाँ भी वियोग रस से परिपूर्ण हैं कुछ अंश....

''बिनु तेरे तो दिन है सूना रात भी तन्हा रही
चाँद भी रौशन नहीं है तारे भी गुम हैं कहीं
तेरे होने से महकता है मेरा सारा जहाँ
इन निगाहों का तेरे बिन आसरा कुछ नहीं।''[9]

इसी समूह में एक और नये रचनाकार अनुज तिवारी की काव्य पंक्तियाँ जो समकालीन मानव के संघर्षों के संदर्भ को दर्शाती यह कविता–

''आसरा कुछ भी नहीं है वासता कुछ भी नहीं
जिन्दगी में चन्द लम्हों के सिवा कुछ भी नहीं

x x x x x

हम उसूलों पे चले हैं, राह उल्फत मोड़ पे।
रौंदने के इक सिवा अब रासता कुछ भी नहीं।।''[10]

उपर्युक्त काव्य पंक्तियों को देख कर यह आसानी से समझा जा सकता है कि इस समूह में हो रही रचनाएं अपने आप में उत्कृष्ट है।

हाइकु तथा अन्य : इस समूह में कविता के कई रूप देखने को मिले हैं। ऐसे नवांकुरों द्वारा हाइकु रचना भी खूब हो रही है। इस समूह में बादल विषय पर जो हाइकु लिखी गई है। उनके रचनाकार एवं उनकी रचनाओं के अंश

राजेन्द्र कुमार की हाइकु रचना–

बादल अभी
धूल भरे लगते
मेघ कहाँ हैं।

x x x

बस इतना
बृज का संदेश है
सावन मेघ[11]

इसी बादल विषय पर एक अन्य रचनाकार लिखते हैं–

बादल बन
गिरते गगन के
आंसू निर्मल

x x x

करूणामयी
घनघोर घटा हूँ
बरसू नित[12]

उक्त पंक्तियाँ चंचल पाहुजा की हैं इन के अलावा 'भाऊराव महंत' की हाइकु का एक नमूना–

काले बादल
जैसे है लहराता
तेरा आँचल

x x x

काले बादल
जब जब न आए
सूखी धरती[13]

अमित कुमार दुबे के द्वारा कुण्डलियाँ छन्द पर एक प्रयोग किया गया है जो उत्तर प्रदेश की नवनिर्मित सरकार के द्वारा एण्टीरोमियो और बूचड़खाना बन्दी पर लिखी गई है –

धीमी तन की आँच है, गया न मुख में मांस।
कस आवै रोमांच अब, प्रतिबंधित रोमांस ।।
प्रतिबन्धित रोमांस, जमाना कैसा आया।
लैला भी मजबूर, शिथिल मजनू की काया।।
कहे अमित कविराय, रोज दिखती है छीमी
योगी का है योग, आँच तन की है धीमी।।[14]

यह समूह इस प्रकार के प्रयोगों से भरा पड़ा है और इन सब के बीच यह समूह एक नयी जमीन तैयार कर रहा है जो नये लेखकों के लिए एक जमीन बना रहा है।

2 विश्व हिन्दी रचनाकार मंच

यह मंच मुख्य रूप से नये कवियों के लिए है किन्तु पुराने साहित्यकार भी इसमें लिखने से गुरेज नहीं करते हैं। इस समूह में 11 हजार से अधिक सदस्य हैं जिनमें से ज्यादातर लोग अपनी–अपनी रचनाओं को इसमें प्रस्तुत करते हैं। इसमें पद्य के लगभग प्रचलित छन्दों का खूब प्रयोग हो रहा है। इनमें लिखी जा रही रचनाओं का स्तर औसत है किन्तु अश्लील बिलकुल नहीं हैं। उदाहरण के लिए प्रस्तुत है अनीता सिंह की 'रात राग' कविता–

कुछ राते
टंगी है
चीर वन में।
x x x
सबके हिस्से में
रात
नहीं होती।।[15]

अनीता सिंह की यह कविता संकेतों के माध्यम से बहुत कुछ कह देती है एक तरफ नियति तो दूसरी तरफ व्यवस्था की मार और इसके मध्य कर्मशील इंसान है। वही आगे डॉ. शैलजा सतीश की एक दाम्पत्य जीवन पर लिखी कविता है जिसकी अभिव्यंजना इस प्रकार है।

जिन्दगी तलाशती हूँ तुझे.....
कहीं और नहीं
बस तुझमें !!
x x x x
मैं रूमानियत तलाशती हूँ
कहीं और नहीं.....
बस ! तुझमें !![16]

यह कविता परिवार और सामाजिक टूटन के दौर में परिवार और प्रेम के समर्पण को संदर्भित करती है। इसी समूह में बासदेव शर्मा ने 'आज का मीडिया' शीर्षक से कुछ रचना दोहे में रचते हैं। कुछ अंश.....

किसी तरह यदि हो जाये, मीडिया
महरवान ।
रातों रात बन जाये, हर मानव गुणगान ।।

x x x x x

खेल खिलाए आज बना व्यापार
राजनीति से फल रहा, इसका
कारोबार।[17]

इन दोहों के माध्यम से रचनाकार ने मीडिया में व्याप्त दोष को चिंहित किया है। इसी क्रम में पूनम झा की एक शानदार गजल है....

कभी फूलों कभी खारों से बचना
ऐ दोस्त, शब्दों के वारों से बचना।।

मत बोलो अपने राज हर किसी से
बहुत मुश्किल है राजदारों से बचना ।।[18]

इसी मंच से सुनील सरना की एक गजल.....

बुझी चिंगारियों को हवा देते हैं
फिर से जलने की सजा देते हैं।

बड़े बेदर्द हैं ये जमाने के बंशर
हयात को मौत की वजा देते हैं।[19]

वहीं पूनम गर्ग ने अपनी कविता के द्वारा समाज में छुपे गद्दारों के प्रति सचेत किया है। स्त्री को न जाने कौन? कहाँ? पर धोखा देदे इसका दर्द झलकता है इनकी कविताओं में। पंकज बसंत अपनी कविता में सूरज के प्रति जो दृष्टिकोण अपनाते हैं वह देखते ही बनता है–

कब सूरज नाराज हुआ है ?
बोलो बादल पर
कब सूरज बाहर निकला है ?
आनन–फानन कर ?
भले ग्रीश्म में सूरज
अपनी रौ में बहता है,
कब उसने अफसोस किया है ?
बोलो सावन पर।[20]

पंकज बसंत की यह कविता सूरज के दैनंदिन की कहानी प्रस्तुत करती है, और साथ ही उसकी लोकवादी दृष्टिकोण पर ध्यानाकर्षित करती है।

नीलाक्ष ने अपनी कविता 'धर्मयुग' के द्वारा दो योद्धाओं के युद्ध का कौशल दिखाया है जो महज एक युद्ध नहीं है धर्मयुद्ध है, एक तरफ दशानन का वीर मेघनाद, दूसरी तरफ रामानुज लक्ष्मण। इन दोनों के युद्ध का जो दृश्य है वो इस प्रकार है–

धर्मयुद्ध में हुआ सामना
दो संतियों के आन का।

उर्मिला और सुलोचना के
विश्वास के घमाशान का।।

x x x x x

दोनों त्यागी दोनों योगी
एक शेशनाग एक मेघनाद

एक शक्ति थी राम की
दूजा विश्वास दशानन का।[21]

इसी समूह में कानपुर के गीतकार राकेश श्रीवास्तव का एक प्रेम गीत है इस गीत के द्वारा वह प्रेम में पूर्णता के सम्बन्ध में लिखते हैं–

अब मुझे प्यार की मंजिल मिल गयी
मैं तेरा हो गया, तू मेरी हो गयी।[22]

विमर्श की दृष्टि से मान्यता दुबे असीम की ये रचना बड़ी मारक है जो समाज में व्याप्त दोष को निर्दिष्ट करती है.....

है कहीं दीवार मजहब है कहीं पे गोलियाँ।
खो गई हैं आज कल तो बेटियों की शोखियाँ।।

x x x x x

जुल्म होता ही रहा इन पर जमाने से 'असीम'।
हर खुशी इनको भी देकर भर दो इनकी झोलियाँ।।[23]

किसानों की बदहाल स्थिति पर नीता सिंह बैस की यह कविता किसानों का प्रतिनिधित्व करती है। किसान कितना परेशान है किस–किस प्रकार से उसका शोषण हो रहा है। यह कविता किसानों के मर्म को प्रस्तुत करने वाली कविता है.....

भारतीय अर्थ व्यवस्था में है किसानों का सहभाग
किन्तु मेरा देश का किसान हमेशा रहा है बदहाल

करता है बड़े मनोयोग से अनाज की बंम्पर पैदावार
इंसाफ करती नहीं किसी भी पार्टी की हो सरकार

x x x x x

अब और कितनी परीक्षा लोगी हमारी ओ सरकार
धनकुबेरों का करोड़ों करते रहते क्यों कर्ज माफ

खरी–खरी बाते करना जरूरी हुआ अबकी बार
अन्नदाता होकर भी जरूरतों के लिए है मोहताज।।[24]

इस तरह हम देखते हैं कि इस समूह में सामाजिक संदर्भों से लेकर प्रेम करूणा भक्ति राष्ट्रभक्ति, स्त्रीवादी काव्य किसान पर चिंतन आदि विषय पर रचनाएं हो रही हैं। यह समूह अभिव्यक्ति का अच्छा साधन है।

3 हाइकु मंजूषा

हाइकु मुख्य रूप से जापानी कविता है। ''हाइकु का जन्म जापानी संस्कृति की परम्परा जापानी जनमानस और सौन्दर्य चेतना में हुआ और वहाँ पला है। हाइकु में अनेक विचारधाराएँ मिलती हैं जो बौद्ध धर्म (आदि रूप, उसका चीनी एवं परिवर्तित रूप, विशेष रूप से जैन सम्प्रदाय), चीनी दर्शन और प्राच्य संस्कृति पर आधारित हैं। यह भी कहा जा सकता है कि एक हाइकु में इन सब विचार–धाराओं को झांकी मिल जाती है।''[25] हाइकु काव्य को विद्या बनाने का श्रेय बाशो (1644–1694) को जाता है।

हाइकु मात्सुओं बाशो के हाथ आकर निखर गयी। हाइकु की विशेषताएं 1. यह अनुभूति के चरमक्षण की कविता है, 2. यह बिम्ब के अतिसमीप

है। 3. यह तीन पंक्तियों में लिखी जाती है। पहली पंक्ति में पांच अक्षर दूसरी पंक्ति में सात अक्षर तथा तीसरी पंक्ति में पांच अक्षर होते हैं कुल मिलाकर 17 अक्षरों की हाइकु होती है। हाइकु प्रकृति एवं अध्यात्म की वाहक है। भारत में हाइकु लाने का श्रेय गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर को जाता है किन्तु ''हिन्दी में हाइकु का प्रारम्भ वर्ष 1956 में प्रकाशित अज्ञेय के काव्य संग्रह 'अरी ओ करूणा प्रभामय' से माना जाता है।''[26]

उत्तरोत्तर हिन्दी साहित्य ने हाइकु को स्वीकार कर लिया। हाइकु का प्रचलन अब सिर्फ किताबों में ही नहीं रहा बल्कि अब यह सोशल नेटवर्क पर भी खूब प्रचलन में है। हाइकु के विकास और प्रचार के लिए फेसबुक पर कई समूह हैं किन्तु शोध हेतु जिस समूह को चुना है उसका नाम 'हाइकु मंजूषा' है इसमें तीन हजार पांच सौ के ऊपर सदस्य है। इसमें सैकड़ों लोग लिख रहे हैं। इस समूह का आदर्श वाक्य ''हाइकु मंजूषा में आपके उत्कृष्ट हाइकु सादर आमंत्रित है।''[27]

इस समूह में हाइकु लेखन खूब हो रहा है। मधु सिंही, रामेश्वर बंग, मंजू शर्मा, शशी त्यागी, मुकेश कुमार, ऋषी वर्मा आदि इस समूह में रचनाएं कर रहे हैं लेखन शैली के दृष्टिकोण से हम सुधा राठौर के हाइकु से समझने का प्रयास करते हैं–

झरते रहे
दशरथ नयन
पुत्र वियोग

माँ का हृदय
झरती है ममता
जिसमें सदा

नेह झरना
अपनत्व सिंचन
जड़े गहरी[28]

उपयुक्त हाइकु के पहले बन्ध में 'दशरथ के नयनों से आंसुओं को झरने की तरह बहते दिखाया गया है क्योंकि उन्हें पुत्र वियोग है और दूसरे बन्ध में माँ की ममता को झरने की तरह बहते दिखाया गया है और तीसरे बन्ध में अपनत्व की जड़े तभी बढ़ती है जब स्नेह झरने की तरह बहता ही दिखाया गया है। यहाँ पर हाइकु की वर्णन शैली अति स्पष्ट है। हाइकु रचना के उन नियमों का भी पालन किया गया है। जो हाइकु में अंगीकृत है जैसे हाइकु प्रकृति के समीप होता है तो इसमें झरने का उल्लेख है क्योंकि झरना जंगल और पहाड़ियों पर बहता है। तथा हाइकु में बिम्ब उभरते है तो उक्त तीनों बन्धों को पढ़कर एक दृश्य उभर आता हैं इसी रीति पर इस समूह में अन्य रचनाकार भी रचना कर रहे हैं जैसे– चंचला सोनी के कुछ हाइकु–

नैमिश तीर्थ
सरि प्रत्यवमर्थ
मुक्ति समर्थ

x x x

नदी मुहाना
जीवन प्रस्तावना
नीर खजाना

x x x

तट बंदिश
अहर्निश दस्तूर
सरि ख्वाहिश।[29]

इन हाइकु के साथ एक हाइकु 'तेज राम शर्मा' का है–

स्वप्न भी मैंने
काँटों भरे पाले हैं
यहाँ छाले हैं।[30]

नदी पर 'अविनाश बागड़े' के हाइकु

बहती नदी
सितम कैसे कैसे
सहती नदी

कहती नहीं
चुपचाप मगर
रहती नदी

अन्तःकरण
यूँ रेत हो हो कर
ढ़हती नदी।[31]

कुछ हाइकु प्रयोगवादी भी है जैसे अमान चांदपुरी का यह हाइकु

कच्चे मकान
गर्मी में सुख देते
एसी समान।[32]

उर्युक्त हाइकु रचनाओं को बानगी स्वरूप यहाँ पर प्रस्तुत किया गया है। जिनके द्वारा यह कहा जा सकता है कि यह समूह हाइकु रचना का उर्वर क्षेत्र हैं और इसमें उत्तरोत्तर रचनाएं बढ़ती जा रही हैं।

4 लघुकथा–गागर में सागर

लघुकथा कथा साहित्य की एक नवीन विधा है यह कम से कम शब्दों में प्रभावी तरीके से प्रस्तुत भी जाता है। हिन्दी साहित्य में इस विधा के ऊपर खूब लेखन हो रहा है और इस पर कई पत्रिकाएं भी निकल रही हैं। इण्टरनेट पर व्यक्तिगत तथा संस्थागत दोनों माध्यम तथा पत्रिकाओं पर लघुकथा को खूब लिखा जा रहा है। फेसबुक पर कुछ लोग अपनी वाल पर लघुकथा लिखते हैं कुछ लोग समूह में जाकर। हमने यहाँ पर एक ऐसे समूह का चयन किया है जो लघुकथा में ही अपनी रचनाओं का सृजन कर रहा है।

लघुकथा सागर में गागर एक ऐसा समूह है जिसमें हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्यकार भी जुड़े है। इन साहित्यकारों में गिरिराज शरण अग्रवाल, मदन कश्यप, एस. आर. हार्नोट, कौशल किशोर, प्रताप सहगल, हरे प्रकाश उपाध्याय, दिविक रमेश, धीरेन्द अस्थाना आदि हैं। उपर्युक्त साहित्यकारों के मध्य जो रचना लिखी जायेगी वह वास्तव में स्तरीय होगी। आइये देखते हैं इस समूह की लघुकथाएं कैसी हैं ?

संजीव कुमार की लघुकथा 'बाप का कर्ज और बेटे का फर्ज' यह लघुकथा पिता के धर्म और बेटे के कर्तव्य बोध के सापेक्ष रिश्तों पर खरी उतरती लघुकथा है। घर नीलाम होने वाला होता तभी ''दरवाजे पर ये किसी ने नॉक किया तो ऐ लोग घर खोने के डर और घबराहट से एक दूसरे का हाथ पकड़े जोर जोर से रोने लगे। कहाँ जायेंगे क्या करें किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था।[33] माता पिता की परेशानी को समझते हुए पुत्र ने अमेरिका से आकर पिता के द्वारा लिये हुए कर्ज को अपनी मेहनत की कमाई से चुका देता है। और घर को नीलाम होने से बचा लेता है।

'तुम आजाद हो' यह लघुकथा कुसुम जोशी की है इसमें स्त्रीवादी दृष्टिकोण का पूर्ण समावेश है। इस लघुकथा में पति के गुजरने के बाद पत्नी ने पति के छोटे भाई से शादी की, यह मंशा पत्नी के घरवालों की थी। किन्तु बाद में घर वालों का जो चेहरा दिखता है वह बहुत ही वीभत्स होता है। अंततः शशि जो दिवंगत पति के भाई से शादी करती है वह कहती हैं ''कर सकती हूँ, ''तुम्हें आजाद कर सकती हूँ'' और ''अगले महीने प्रकाश का आफिस ज्वाइन कर सकती हूँ'' तुम अपना निर्णय लेने को आजाद हो।''[34] इस लघुकथा में एक स्त्री का यथार्थवादी रूप प्रस्तुत किया गया है। इस लघुकथा के द्वारा शशि के रूप में स्त्री के मजबूत होते चित्र को प्रस्तुत किया गया है।

लघुकथा के रूप में बबिता कौंसुल की रचना 'हौसला' है जो एक माँ बेटी के मेहनत और धैर्य की परिपाटी पर लिखी गई है। इसमें एक लड़की और उसकी माँ के द्वारा खेती में कठोर श्रम को दिखाया है। लहलहाती फसल को देखकर माँ बेटी से कहती है कि ये तुम्हारे हौसलों के कारण हुआ है।

इस समूह में ''सबक'' लघुकथा है इसके लेखक हेमंत राणा है इस लघुकथा में एक पिता अपनी लड़की के बाल मुडवाने जाता है तो लड़की प्रतिकार करते हुए कहती है कि आप मेरे बाल क्यों मुड़वा रहे हो, तो पिता कहता है कि पंडित ने कहा है कि तेरे बाल मुड़वाने से मैं लखपति हो जाऊँगा। लड़की कहती है यह सब भ्रामक है, पाखण्ड है। तब पिता कहता है कि कोई किताब में मयूरपंख रख ले तो उसे विद्या अपने आप नहीं आती, उसके लिए मेहनत करनी पड़ती है। इस लघुकथा में पाखण्ड और अन्धविश्वास पर चोट की गई है।

इस समूह में बहुत सी लघु कथाएँ लिखी गई हैं। इन लघुकथाओं को पढ़ने और उस पर टिप्पणी करने वालों की कमी नहीं है। इस समूह में बहुत से महत्त्वपूर्ण लघुकथाकार और उनकी लघुकथाएँ इस प्रकार है– तेजवीर सिंह (जंगलराज),

अर्चना अग्रवाल गुप्ता (सलाह), आभा अदीब राजदन (हमे तो बेस्ट चाहिए), बबिता कौंसुल (शब्द), हेमंत राना (जाल), बाबू गौतम (प्रथम रात्रिः देव रात्रि), विमल शुक्ला (घमण्ड), सुरेन्द्र कुमार अरोड़ा (बादल), संजय चौधरी (वो तो कोई और था), गौतम कुमार सागर (पंखों की फड़फड़ाहट) तथा मदन लाल श्रीमाली (आखिरी सूरज) आदि सैकड़ों लघुकथाएं हैं जो इस समूह के साहित्य भण्डार को सुशोभित कर रहे हैं।

5 मंच (कहानी)

मंच फेसबुक पर एक ऐसा समूह है जो कहानी लेखन और प्रसारण के उद्देश्य से निर्मित हुआ इस समूह में ग्यारह सौ से ज्यादा लोग जुड़े हैं। इनमें कुछ साहित्यकार हैं कुछ पाठकगण। यह कहानी लेखन के उद्देश्य से बनाया गया एक महत्त्वपूर्ण समूह है।

इस समूह में जिनकी कहानी पढ़ी जा सकती है उनके नाम इस प्रकार हैं– प्रज्ञा की 'मन्नत टेलर्स', कृष्णा शर्मा की 'पानी का कोई अधिकार नहीं होता', अरूण अर्णव खरे की 'एक बुर्जुग दम्पत्ति का वेलेण्टाइन', नसीम साकेती की 'आवाज', डॉ0 नन्दलाल भारती की 'हिजड़ा', मोहन कुमार डहेरिया की 'कोंपल' आदि हैं। फेसबुक के इस समूह में सैकड़ों सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक तथा प्रेरक कहानियाँ हैं जो वर्चुअल दुनिया में साहित्य के धरातल को मजबूत कर रही हैं।

उपर्युक्त समूह तथा उसमे हो रही साहित्यिक सर्जना को देखकर कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया की प्रतिष्ठित वेबसाइट फेसबुक महज गपशप का अड्डा न होकर साहित्यिक सरोकार का केन्द्र भी बनती जा रही है। जहां से लोग अपने तरीके से अपनी बात कहने में दक्ष होते जा रहे है। अब वह दिन दूर नहीं जब कवि सम्मेलन और कवि गोष्ठियां ऑनलाइन आयोजित कि जायेंगी।

सन्दर्भ–

1. शीर्षक साहित्य परिषद
   https://www.facebook.com/groups/1239303299422484
2. वही
3. शीर्षक साहित्य परिषद
   https://www.facebook.com/groups/1239303299422484
4. वही
5. शीर्षक साहित्य परिषद
   https://www.facebook.com/groups/1239303299422484
6. वही
7. शीर्षक साहित्य परिषद
   https://www.facebook.com/groups/1239303299422484
8. वही
9. वही
10. शीर्षक साहित्य परिषद
    https://www.facebook.com/groups/1239303299422484
11. वही
12. शीर्षक साहित्य परिषद
    https://www.facebook.com/groups/1239303299422484
13. वही
14. वही
15. विश्व हिन्दी रचनाकार मंच
    https://www.facebook.com/groups/958602084253017/
16. विश्व हिन्दी रचनाकार मंच
    https://www.facebook.com/groups/958602084253017/
17. वही
18. वही
19. विश्व हिन्दी रचनाकार मंच
    https://www.facebook.com/groups/958602084253017/
20. वही
21. विश्व हिन्दी रचनाकार मंच
    https://www.facebook.com/groups/958602084253017/
22. वही
23. वही

24. विकीपीडिया
https://hi.wikipedia.org/wiki/हाइकु
25. वही
26. हिंदी में हाइकु (२) : स्वरूप और सम्भावनाएं / डॉ. सुरेन्द्र वर्मा
http://www.rachanakar.org/2016/04/blog-post_557.html
27. वही
28. हाइकु मंजूषा
https://www.facebook.com/groups/1732411363699978/
29. वही
30. हाइकु मंजूषा
https://www.facebook.com/groups/1732411363699978/
31. वही
32. वही
33. **लघुकथा–गागर में सागर**
https://www.facebook.com/groups/779877665440856/
34. **घुकथा–गागर में सागर**
https://www.facebook.com/groups/779877665440856/